IAS Mentorship
With Riyasat Ali Sir

PARAMETERS FOR ESSAY COPY EVALUATION

		VERY GOOD	GOOD	AVERAGE	SUBSTANDARD
1.	**Understanding on The Topic**				
2.	**Context of Introduction & Relevance**				
3.	**Understanding on the demand of ESSAY**				
4.	**Body Part:**				
	Contextual Clarity				
	Diversity of Dimensions				
	Relevance of Content/ Quotation				
	Presentation & Organisation of Essay				
	Connectedness & Flow				
	Clarity of massage/articulation and communication				
	Logical Structure and Analysis				
5.	**Language Competence**				
6.	**Context of Conclusion & Relevance**				
7.	**Legibility of hand writing**				

62.0/125

04/08/2025

IAS MENTORSHIP With Riyasat Ali Sir

प्रिय रवि राज, - आपने इस निबन्ध में पिछले निबन्ध से अच्छा प्रयास व सुधार किया है। आगे और Improvement के लिये Voice Massage को सुनें।

1- परिचय प्रासंगिक है।

2- Diversity of Dimensions - अच्छा प्रयास है। और Improvement के लिये सभी MicroComments ध्यान पूर्वक पढ़ें व Voice Massage को भी ध्यान से सुनें।

3- Flow and Connectedness - ✓

4- Deepness of Thinking - ✓

5 - निष्कर्ष - ✓

Voice massage को ध्यान पूर्वक सुनें तथा one to one discussion के लिये Connect करें

All The Best

(1) खोज की वास्तविक यात्रा नए परिदृश्य की तलाश में नहीं, बल्कि नई दृष्टि रखने में निहित है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यह बात 1660 के दशक के मध्य की है जब महामारी फैलने के कारण ब्रिटेन में स्कूल व कॉलेज व यूनिवर्सिटी समेत अधिकांश गैर-आपातकालिक सार्वजनिक संस्थाओं को बंद कर दिया गया। यह वही दौर था जब ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 'न्यूटन' नामक पढ़ने वाला न्यूटन नामक युवा अपने परिवार और साथियों से दूर महामारी के रोकथाम हेतु लागू 'पृथक्करण की नीति' के कारण एक छोटे से कमरे और बाग के बगीचे तक विचरण हेतु सीमित हो गया। किंतु इसी दौरान वहाँ जब पेड़ से एक सेब को गिरते देख न्यूटन के मस्तिष्क में एक विचार आया "सेब आखिर नीचे ही क्यों गिरा, ऊपर अथवा बगल में क्यों नहीं ??" इसी प्रश्न के उत्तर की तलाश में न्यूटन ने सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। और इस रूप में न्यूटन की इस खोज की यात्रा ने नए परिदृश्य के स्थान पर नई दृष्टि का सूत्रपात किया।

अपने इस निबंध में हम खोज से संबंधित ऐसे कई आयामों पर विचार करेंगे।

(2)

Perfect thesis ✓

यथा – खोज से हमारा क्या आशय होना चाहिए? क्या खोज की वास्तविक यात्रा नई दृष्टि की तलाश में ही अथवा खोज की यात्रा का संबंध नए परिदृश्य की तलाश से भी है? खोज की दृष्टि से नए परिदृश्य और नई दृष्टि की तलाश में से अधिक महत्वपूर्ण क्या है? क्या खोज की यात्रा का संबंध किसी अन्य चीज की तलाश से भी हो सकता है? तथा खोज के संबंध में हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए?

खोज की उपयुक्त परिभाषा विभिन्न आयामों व दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए. → Perfect ✓

सामान्य अर्थों में तो खोज का तात्पर्य किसी नई चीज को प्राप्त करने से होता है किंतु, यदि हम व्यापक दृष्टि से देखे तो खोज की परिधि किसी नई चीज की प्राप्ति से कई अधिक विस्तृत है जिसमें नए दृष्टिकोण, नए विचार, नई तरीके और नए प्रयास आदि भी शामिल होते है। खोज के अर्थ को स्पष्ट करने के क्रम में 'मार्शल रोस्ट' का यह कथन गौरतलब है –

Contextually perfect Quote ✓

"खोज का अर्थ हमेशा कुछ नया पा लेना नहीं होता, कभी-कभी नए नजरिये से भी देखना होता है।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

ख्यातव्य है कि लोगों के बीच यह बहुधा विमर्श का विषय होता है कि खोज की वास्तविक यात्रा नए परिदृश्य की तलाश में है अथवा नई दृष्टि की तलाश में है। किंतु इस विषय पर मेरा एक भिन्न दृष्टिकोण है मेरा मानना है कि खोज की वास्तविक यात्रा न तो केवल नए परिदृश्य की तलाश में है और न ही केवल नई दृष्टि की तलाश में अपितु, नई दृष्टि व नए परिदृश्य की तलाश की ~~तलाश~~ एक-दूसरे के पूरक है और यूँ कहे कि नए दृष्टि की तलाश जहाँ खोज की यात्रा का पहला चरण है वही नए परिदृश्य की तलाश इसका दूसरा चरण।

इस क्रम में 14वीं-15वीं सदी में यूरोप में हुए 'पुनर्जागरण' नामक सांस्कृतिक आंदोलन तथा 17वीं-18वीं सदी में आया 'प्रबोधन' के युग की चर्चा विशेष रूप से प्रासंगिक हो सकती है। वस्तुतः पुनर्जागरण एक प्रकार का जीवन दर्शन था जिसका मुख्य बल ईश्वर के समानांतर मनुष्य के महत्व को स्थापित करने, मनुष्य के व्यक्तिगत पहचान व सम्मान को सुनिश्चित करने तथा

(4) चर्च की रूढ़िवादिता और कट्टरता पर कुठाराघात कर विज्ञान और तर्कवाद को प्रोत्साहित करना और लोगों में साहसिक एवं खोजी दृष्टिकोण को विकसित करने में था जबकि दूसरी तरफ पुनर्बोधन ने निजता के महत्व वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रासंगिकता तथा स्वतन्त्रता की अवधारणा पर अभूतपूर्व रूप में बल दिया।

इस रूप में पुनर्जागरण व प्रबोधन अपने आप में एक नवीन दृष्टि थी जिसका विकास स्वयं को खोजने की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप हुआ। गौरतलब है कि पुनर्जागरण द्वारा प्रेरित इसी साहसिक एवं खोजी दृष्टि में कुस्तुनतुनिया के पतन 1453 के पश्चात् विद्वानों की पलायन के बाद भी यूरोपीय शासक वर्ग एवं नाविकों को नए मार्गों की खोज हेतु प्रेरित किया। इसका परिणाम कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज और वास्कोडिगामा द्वारा भारत तक पहुँचने के नवीन व आसान मार्ग की तलाश के रूप में देखने को मिला जिसने अंतत: पूरी वैश्विक व्यवस्था को बदल दिया।

Contextually Relevant point of discussion

पुनः यदी हम चर्चा विज्ञान के क्षेत्र की करे तो हम पाते हैं कि विज्ञान की दुनिया में भी खोज की पहली अभिव्यक्ति नवीन सिद्धांत व नवीन दृष्टि के रूप में होती है और फिर यह एक नई प्रौद्योगिकी का रूप ले लेता है। गौरतलब है कि आरंभ में पूरी दुनिया में सूर्य केन्द्रित ब्रह्मांडीय मॉडल स्वीकृत व समर्थित था किंतु अपनी खोज से पहले कोपरनिकस और फिर गैलीलियो ने सूर्य केन्द्रित ब्रह्मांडिय मॉडल का प्रतिपादन कर दुनिया के समक्ष एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। कालांतर में इसी नवीन दृष्टिकोण में अंतरिक्ष विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। जो उपग्रहों के माध्यम से ~~अत्यधिक~~ मानव जीवन को अत्यधिक सरल व सहज बना रहा है।

ठीक इसी प्रकार से खोज की एक ~~यात्रा~~ नवीन यात्रा पर 19 वीं सदी एक महान विचारक कार्ल मार्क्स भी चले। उन्होंने एडम स्मिथ के क्लासिकल अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का खण्डन कर एक नवीन दृष्टि प्रस्तुत किया।

(6)

इस क्रम में उन्होंने न केवल पहली बार इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की अपितु, उन्होंने इस दौर में प्रचलित पूंजीवादी व्यवस्था के शोषणमूलक चरित्र की व्याख्या करते हुए पहली बार 'रक्तपूर्ण क्रांति' के द्वारा इसके समाधान का प्रस्तुत किया। इस क्रम में इनके इस कथन का ज़िक्र उल्लेखनीय होगा—

"दुनिया के मजदूरों एक हो तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है सिवाय पैरों में बंधी बेड़ियों के, जबकि पाने के लिए सारा जहां है।"

आगे चलकर कार्ल मार्क्स के इन्हीं विचारों को आधार बनाकर लेनिन के नेतृत्व में रूस में बोल्शेविक क्रांति हुई तथा रूस में एक साम्यवादी सरकार अस्तित्व में आई इस साम्यवादी सरकार के द्वारा विशेष रूप से स्टालिन के नेतृत्व में कार्ल मार्क्स के विचारों को मूर्त रूप देने के लिए कई कदम उठाए गए।

इस dimension में ऐतिहासिक Point को discuss करने के बाद निबंध के Theme को पुनः स्थापित करें, जिससे कि Connectedness बना रहे

उम्मीदवार का इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

7

इन अर्थों में यदि देखें तो हम पाते हैं कि खोज की यात्रा पहले नई दृष्टि और फिर नए परिदृश्य की तलाश सुनिश्चित करती है किंतु यह निश्चित रूप से यह सही है कि खोज की यात्रा का प्रभाव नए परिदृश्य की तलाश से कहीं अधिक नई दृष्टि की तलाश पर पड़ता है। आज दुनियाभर में अनगिनत विचार व दृष्टिकोण निरंतर खोजे जा रहे हैं। किंतु उनमें से कुछ ही एक निश्चित भौतिक रूप ले पाता है तथापि जहाँ नई दृष्टि की तलाश व्यक्ति को नवाचारी व रचनात्मक बनाती है वहीं नए परिदृश्य की तलाश व्यक्ति को आविष्कारक के रूप में स्थापित कर पाती है।

Very good विश्लेषण प्रासंगिक & logical discussion on the theme of Essay

हालांकि ऐसा नहीं है कि खोज का संबंध केवल नई दृष्टि या नए परिदृश्य की तलाश से है अपितु खोज की यात्रा कई अन्य प्रभावों / परिणामों को जन्म देती है। इस लेख में पहला तो यही है कि खोज की यात्रा मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

Contextually Relevant and logically Correct Suggestive idea.

दरअसल, डार्विन के विकास क्रम के सिद्धांत से लेकर हर्बर्ट स्पेन्सर के 'सर्वोत्तम की उत्तरजीविता' सिद्धांत तक मनुष्य के निरंतर आगे बढ़ने की महत्व

पर प्रकाश डालता है यह सिद्धांत सुनिश्चित करते हैं यदि मनुष्य अपने खोजी दृष्टिकोण की मदद से निरंतर आगे नहीं बढ़ता रहता है तो एक समय के पश्चात् स्वयं मानव सभ्यता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

स्वयं डॉ A.P.J. अब्दुल कलाम ने भी यह कहा गया है "जिज्ञासा जन्म देती है खोज को, और खोज जन्म देती है प्रगति को" ऐसे में प्रगति के पथ पर चलते रहने तथा मानव सभ्यता को पूर्णतावाद तथा अंतिम सत्य तक पहुँचाने हेतु खोज की यात्रा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

ऐसे में खोज जो जीवन का उद्देश्य नहीं अपितु स्वयं जीवन होना चाहिए अपने आप में मानवता के सार को प्रतिबिंबित करता है खोज की यात्रा के अनुगमन के बिना न तो हम प्रगति कर सकते हैं और न ही दीर्घकाल तक अस्तित्व में बने रह सकते हैं। ~~स्वयं~~ 'युवाल नोवा हरारे' की पुस्तक 'सेपियन्स' के अनुसार स्वयं मानव सभ्यता का विकास एक महान खोज "संज्ञानात्मक क्रांति" के कारण हुआ।

निबन्ध के प्रासंगिक रूप से सुधार सुझाव सही उदाहरण के साथ

9

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि खोज की यात्रा न केवल नई दृष्टि व नए परिदृश्य के तलाश को संभव बनाती है अपितु स्वयं मानवता को प्रासंगिक व धारणीय बनाती है। ऐसे में जिस खोजी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति गैलीलियो व न्यूटन के विचारों एवं कार्यों से लेकर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51(क)(ज) में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के रूप में हुई है के प्रति हमें हमेशा प्रतिबद्ध रहना चाहिए इस क्रम में महान वैज्ञानिक एल्बर्ट आइंसटीन का यह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय होगा।

"मनुष्य की सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि उसके पास तो नई है किंतु उन्हें वह पुरानी चेतना के द्वारा ही हल करने की कोशिश करता है और ऐसा कभी नहीं हो सकता"।

X

निष्कर्ष प्रासंगिक है। आपने निबन्ध के विषय का पुनःस्थापन भी किया है तथा एक प्रासंगिक रूप से उपयुक्त के साथ End किया है।